Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 6 | ISSN : 2581- 6306

प्रमुख पुराणों में श्रीकृष्ण कथा का संक्षिप्त स्वरूप

डॉ0 संगीता अग्रवाल
एसोसिएट प्रोफेसर,
विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग,
आर्य कन्या पी0जी0 कालेज हापुड़, उत्तर प्रदेश,भारत।

सतलेश कुमार सिंह यादव
शोधच्छात्र,
आर्य कन्या पी0जी0 कालेज हापुड़,
सम्बद्ध चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

Article Info
Volume 4, Issue 6
Page Number : 01-06

Publication Issue :
November-December-2021

Article History
Accepted : 01 Nov 2021
Published : 08 Nov 2021

सारांश– पौराणिक ग्रन्थों में प्राचीन कथाओं, वंशावलियों, इतिहास, भूगोल के तथ्यों एवं सामान्यतः वैदिक तथा लौकिक ज्ञान–विज्ञान के समस्त पक्षों या विषयों को कालक्रम से समाविष्ट किया गया है। जिसका स्वरूप विकासशील रहा है, किन्तु अन्तिम स्वरूप वेदव्यास के द्वारा सम्पादित किया गया। पुराण में निरूपित कथाओं एवं वंशावलियों में कृष्ण–कथा एवं विष्णु के अवतारों का बृहद् स्वरूप प्राप्त होता है।

मुख्य शब्द– पुराण, वैदिक, लौकिक, वेदव्यास, विष्णु, साहित्य, संस्कृत।

विश्व–साहित्य जगत् का प्राचीनतम एवं समृद्धतम साहित्य भारतीय संस्कृत वाङ्मय है। जिसमें ज्ञान–विज्ञान का कोई भी ऐसा पक्ष या तथ्य नहीं है जो कि सूक्ष्म या वृहद् रूप में न प्राप्त होता हो। माँ भारती की कृपा से संस्कृत वाङ्मय के भण्डार को समृद्ध बनाने के लिए भारतीय मनीषियों के द्वारा चिरकाल से ही विविध प्रकार के ग्रन्थों यथा–इतिहास, पुराण, व्याकरण, दर्शन, काव्यशास्त्र, महाकाव्य तथा चम्पू आदि का प्रणयन किया जा रहा है। ऐसे ग्रन्थों में पुराण साहित्य का प्रमुख स्थान है।

पौराणिक ग्रन्थों में प्राचीन कथाओं, वंशावलियों, इतिहास, भूगोल के तथ्यों एवं सामान्यतः वैदिक तथा लौकिक ज्ञान–विज्ञान के समस्त पक्षों या विषयों को कालक्रम से समाविष्ट किया गया है। जिसका स्वरूप विकासशील रहा है, किन्तु अन्तिम स्वरूप वेदव्यास के द्वारा सम्पादित किया गया। पुराण में

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

निरूपित कथाओं एवं वंशावलियों में कृष्ण–कथा एवं विष्णु के अवतारों का बृहद् स्वरूप प्राप्त होता है। जिसमें भगवान् श्रीकृष्ण को साक्षात् परब्रह्म परमेश्वर के रूप में दिखाया गया है। **विष्णु, ब्रह्म, भागवत, पद्म** और **ब्रह्मवैवर्त पुराण** आदि पुराणों के अनुसार माँ पृथ्वी दुराचारी राक्षसों से पीड़ित होकर देवताओं, ऋषियों और ब्रह्मा सहित श्रीपति भगवान विष्णु के पास क्षीरसागर के तट पर जाती है और उन सभी देवों और ऋषियों के साथ माता पृथ्वी धर्म संस्थापन, दैत्यवध और जगत् की रक्षा करने हेतु जगत्पालक श्रीविष्णु से यदुवंश में अवतरित होने की प्रार्थना करती हैं। तब मानवमात्र के कल्याण के लिए भगवान् विष्णु पृथ्वी पर अवतरित होते हैं और अपनी माया द्वारा विविध प्रकार की दिव्य क्रीड़ा करते हैं। भगवान विष्णु के इन समस्तलीलाओं का निरूपण पुराणों में वृहद् एवं सूक्ष्म रूप में मिलता है। कतिपय पुराणों में श्रीकृष्णचरित संकीर्तन विस्तार से हुआ है तो कुछ पुराणों में संक्षिप्त रूप में उपलब्ध होता है।

विस्तृत कृष्णकथा से सम्बन्धित प्रमुख पुराण– भागवत पुराण, विष्णु पुराण, पद्मपुराण, ब्रह्मवैवर्तपुराण, ब्रह्मपुराण है। जिसमें श्रीकृष्णचरित को सविस्तार से निरूपित किया गया है। जो कि निम्नवत् है–

भागवतपुराण

श्रीमद्भागवतपुराण में श्रीकृष्ण–कथा को इतना व्यापक और व्यवस्थित आधार प्रदान किया गया है कि इसमें पूर्ववर्ती समस्त पुराणों का समावेश हो जाता है। अपने वर्ण्य–विषय की गरिमा, विस्तार और व्यापकता के कारण यह एक निसर्ग–सिद्ध काव्य बन गया। इसमें श्रीकृष्ण लीलाओं का साङ्गोपाङ्ग विवेचन तथा उनकी दार्शनिक विवेचना हुयी है। श्रीमद्भागवतपुराण में कृष्णकथा का स्वरूप मुख्यतः दो रूपों में मिलता है। प्रथम ब्रह्मस्वरूप तथा दूसरा मानवावतार स्वरूप।

भागवतपुराण के अनेक स्थलों पर भगवान् श्रीकृष्ण को साक्षात् परब्रह्म परमेश्वर के रूप में निरूपित किया गया है। मानवमात्र के कल्याण के लिए भगवान् पृथ्वी पर अवतरित होते हैं और अपनी माया द्वारा दिव्य–क्रीड़ा करते हैं। जैसा कि श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित है–

भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि मैं अपनी प्रकृति को अधीन करके अपनी योगमाया से प्रकट होता हूँ अथवा जब–जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब–तब ही मैं रूप को रचता हूँ अर्थात् साकार रूप में लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ–

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।[1]

साधु–पुरुषों का उद्धार करने के लिए, पाप–कर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने के लिए मैं युग–युग में प्रकट हुआ हूँ–

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे–युगे।।[2]

श्रीमद्भगवद्गीता के उपर्युक्त श्लोकों से स्पष्ट होता है कि भगवान् श्रीकृष्ण साक्षात् परब्रह्म हैं, जिनका अवतरण तीन प्रकार से होता है–पूर्णाविभवि, अंशावतार, भावेशावतार। श्रीमद्भागवतपुराण में वर्णित श्रीकृष्ण के जन्म से लेकर उनके परलोक गमन तक की प्रत्येक घटना से श्रीकृष्ण का परमेश्वरत्व तथा जगदीश्वरत्व ही सिद्ध होता है। भगवान श्रीकृष्ण जब श्रीदेवकी जी के गर्भ से अवतार लेने के लिए उद्यत हुए तब ब्रह्मादि देवगणों द्वारा उनकी स्तुति इस प्रकार हुयी है–

सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं सत्यस्ययोनिं निहितं च सत्ये
सत्यस्य सत्यमृतसत्यनेत्रं सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्नाः।।[3]

उनके अपरिच्छिन्नत्व की पुष्टि यशोदा कृत ऊखल–बंधन के प्रयत्न, द्रौपदी–वस्त्रापहरण और नारद द्वारा उन्हें हजारों पत्नियों के महलों में एक साथ देखने से होती है। इसी पकार उनके परब्रह्म परमात्मा का दर्शन, जब नागपत्नियाँ कालिय के प्रति भगवान् श्रीकृष्ण से क्षमा–याचना करती हैं तब वे उनके परब्रह्म परमात्मा स्वरूप का ही वर्णन करती हैं।

श्रीमद्भागवतपुराण कुल 12 स्कन्धों में विभाजित है। श्रीमद्भागवतपुराण के दशम–स्कन्ध में श्रीकृष्णकथा का विस्तार से साङ्गोपाङ्ग विवेचन किया गया है। इसमें श्रीकृष्ण लीलाओं का वर्णन अन्य पुराणों की अपेक्षा अधिक है। यह कथा पूर्वाद्ध तथा उत्तरार्द्ध के रूप में विश्लेषित है। इसके पूर्वार्द्ध भाग के कृष्ण–लीलाओं में श्रीकृष्ण का मथुरा गमन, कंस आदि का मारण, उग्रसेन का राज्याभिषेक तथा सान्दीपनी से श्रीकृष्ण का विद्योपार्जन करना वर्णित है। उत्तरार्द्ध भाग के श्रीकृष्ण–लीलाओं में श्रीकृष्ण का शत्रु–संहारक, राजनीतिक एवं लोकोपकारी रूप वर्णित है। यदुकुल संहार एवं श्रीकृष्ण के स्वधाम–प्रस्थान की कथा को एकादश स्कन्ध में विस्तार से निरूपित किया गया है।

श्रीकृष्ण जन्म से मथुरा आगमन–पर्यन्त लीला वर्णन के प्रसङ्ग में महर्षि वेदव्यास जी ने भागवतपुराण के दशम स्कन्ध के पूर्वार्द्ध भाग में भगवान् श्रीकृष्ण की परम अन्तरङ्ग लीलाओं को उद्धृत किया है। इसमें लीलाओं का स्वरूप पूर्णरूपेण प्रतीकात्मक है। इन लीलाओं का सम्बन्ध विविध असुरों के संहार एवं उद्धार से है। इसके अन्तर्गत श्रीकृष्ण जन्म–प्रसङ्ग, तृणावर्त– उद्धार–लीला, जृम्भण लीला, नामकरण संस्कार एवं बाल लीला, पूतना उद्धार लीला, शकटभंजन लीला, मृद्भक्षण लीला, ऊखल बन्धन लीला, यमलार्जुन लीला, इन्द्रदर्प–नाश लीला इत्यादि लीलाओं का वर्णन हुआ है।

अन्ततः हम कह सकते हैं कि श्रीमद्भागवतपुराण में श्रीकृष्ण सर्वत्र ब्रह्म रूप से वर्णित है और उनकी सभी मानवीय लीलाओं की दार्शनिक व्याख्यायें की गयी है।

विष्णुपुराण

श्रीकृष्ण कथा विषयक पुराणों में विष्णुपुराण प्राचीनतम माना गया है। यह छः अंशों में विभक्त है, जिसके पाँचवे अंश में कृष्ण–कथा सम्पूर्ण भाग विस्तार से निरूपित किया गया है। इस पाँचवे अंश में कुल 38 अध्याय है। विष्णुपुराण के अनुसार यह जगत् विष्णु से उत्पन्न होता है, उन्हीं में स्थित है, वे ही इसकी स्थिति एवं लय के कर्ता हैं तथा जगत् भी वे ही हैं।[4] यही वासुदेव विष्णु ही ब्रह्म होकर रजोगुण का आश्रय लेकर इस संसार की रचना में प्रवृत्त होते हैं तथा रचना हो जाने पर सत्वगुण विशिष्ट अतुल पराक्रमी भगवान् विष्णु उसका कल्पान्त–पर्यन्त युग–युग में पालन करते हैं और कल्पान्त में अतिदारूण तमः प्रधान रूद्र रूप धारण कर वे जनार्दन विष्णु ही समस्त भूतों का भक्षण कर लेते हैं। भारपीड़ित पृथ्वी का उद्धार करने के लिए वासुदेव विष्णु का अंशावतरण यदुकुल में कृष्ण के रूप में हुआ। विष्णुपुराण में श्रीकृष्ण कथा भागवत के समान ही है। जिसके अन्तर्गत वसुदेव–देवकी विवाह, अवतार–कारण श्रीकृष्ण का गर्भ प्रवेश एवं प्राकट्य, योगनिद्रा प्रसङ्ग, गोकुल में पूतना आदि विविध असुरों के संहार, यमलार्जुन की मुक्ति, रसक्रीड़ा, मथुरा–आगमन, कुब्जा पर अनुग्रह, मल्लसंहार एवं कंसवध, उग्रसेन का राज्याभिषेक, जरासंध की पराजय, कालयवन–वध, द्वारका–गमन, रूक्मिणी हरण, शम्बर–वध, नरक–वध, पारिजात–हरण, बाणासुर की सहस्र–भुजाओं का कर्तन, पौण्ड्रक–वध, काशीदहन, यदुवंश विनाश, श्रीकृष्ण के स्वधाम–गमन की कथा आदि वर्णित है। लेकिन तृणावर्त–उद्धार, जृम्भण–लीला, मृदा–भक्षण,

पलविक्रयिणी पर कृपा, बकासुर, अधासुर उद्धार–लीला, ब्रह्मा–मोह–नाशलीला, दावानल–परित्राण, चीरहरण, विप्र पत्नियों पर अनुग्रह, वरुणालय से नन्द–मोचन, सुदर्शन एवं शंखचूड़ उद्धार तथा व्योमसुर उद्धार आदि की कथा विष्णुपुराण में नहीं मिलती।

जरासंध की पराजय, कालयवन एवं मुचुकुन्द की कथा, रूक्मिणी–हरण, प्रद्युम्न–हरण, शम्बर–वध, स्यमंतक मणि प्रसङ्ग एवं नरकासुर वध की कथा भागवत के समान है, लेकिन पारिजात हरण द्वारा इद्राजी का मानभङ्ग वर्णन भागवत में नहीं है। विष्णुपुराण के नरकासुर को भागवत में भौमासुर कहा गया है।

जिस प्रकार भागवतपुराण में कृष्ण की सोलह हजार रानियों के साथ रूक्मिणी, जाम्बवती, सत्यभामा, कालिन्द्री, मित्रविन्द्रा आदि पटरानियों का नाम आता है उसी प्रकार विष्णुपुराण के पंचम अंश, अध्याय 31 तथा चतुर्थ अंश के पन्द्रहवें अध्याय में श्रीकृष्ण की 16100 रानियाँ बतायी गयी हैं जिसमें रूक्मिणी, जाम्बवती और चारूहासिनी आदि मुख्य थीं।[5] पंचम अंश के 39वें अध्याय में शाप द्वारा यदुवंश विनाश तथा श्रीकृष्ण के स्वधाम–गमन के साथ विष्णुपुराण की कृष्णकथा समाप्त हो जाती है।

पद्मपुराण

पद्मपुराण में भागवतपुराण तथा ब्रह्मवैवर्तपुराण की कृष्णकथा का ही अनुसरण किया गया है। श्रीकृष्ण की पार्थिवलीला का प्रधान धाम वृन्दावन है। गोलोक, गोकुल, द्वारका तथा ब्रह्म का परम ऐश्वर्य सब वृन्दावन पर आश्रित है।[6] इस पुराण में श्रीकृष्ण का नन्दगोपालात्मज होते हुए भी ऐश्वर्य वर्णित है। श्रीकृष्ण ही वृन्दावन के अधीश्वर हैं, व्रज के राजा हैं–

दिव्यव्रजवयोरूपं कृष्णं वृन्दावनेश्वरम्।

इस पुराण में राधा को वृषभानु की कन्या नहीं बताया गया। वह तो वृषभानु को यज्ञ के लिए भूमि शुद्ध करते समय मिलती हैं और वृषभानु उनका पालन–पोषण अपनी कन्या समझकर करते हैं। भागवत की तरह ही रासलीला का वर्णन किया गया है। रासलीला के समस्त उपादानों को आध्यात्मिक आचरण का चोला पहनाया गया है। श्रीकृष्ण की प्राणवल्लभा, आद्याप्रकृति श्रीराधा प्रपंच का गोपन करने के कारण 'गोपी' कहलाती हैं। उनकी ललिता आदि आठ सखियाँ अष्ट प्रकृतियाँ हैं। वृन्दावन को चर्मचक्षुओं से अदृश्य तेजोमय स्थान के रूप में अभिव्यक्त किया गया है। वस्तुतः श्रीराधा साक्षात् महालक्ष्मी तथा श्रीकृष्ण साक्षात् नारायण हैं। जड़ चेतनमय सम्पूर्ण संसार श्रीराधा–कृष्ण का ही स्वरूप है।[7]

पद्मपुराण के उत्तरखण्ड में अध्याय 272 से 279 तक श्रीकृष्णकथा भागवतपुराण के समान वर्णित है। अध्याय 273 में कृष्ण बलराम के उपनयन एवं सोये मथुरावासियों को द्वारका पहुँचाने की चर्चा है। 276वें अध्याय में नरकासुर वध का वर्णन है। बाणासुर आख्यान में श्रीकृष्ण द्वारा शिव पर मोहन अस्त्र का प्रयोग करना और पार्वती के प्रार्थना करने पर उसका संवरण करना वर्णित है। अध्याय 279 में श्रीकृष्ण द्वारा गोप–गोपियों के तारण, कृष्ण का स्वधाम–गमन तथा यदुकुल संहार के साथ कृष्ण–कथा समाप्त होती है।

ब्रह्मवैवर्तपुराण

जिस पुराण में श्रीकृष्ण ने अपनी पूर्ण ब्रह्मरूपता प्रकट कर दिया है वह ब्रह्मवैवर्तपुराण है। ब्रह्मवैवर्त शब्द का अर्थ है–**ब्रह्मणो विवर्तः ब्रह्मविवर्तः।** ब्रह्म का आद्य विवर्त प्रकृति है। अतः ब्रह्मविवर्त शब्द का अर्थ प्रकृति होता है।

ब्रह्मविवर्तस्य विवर्ताः यत्र प्रदर्श्यन्ते तत् पुराणं ब्रह्मवैवर्तम्।

अर्थात् जहाँ प्रकृति के भिन्न परिणामों का प्रतिपादन हो वह 'ब्रह्मवैवर्तपुराण' है। प्रकृति के पाँच विवर्तों में पाँचवाँ विवर्त राधा हैं।[8] राधा नाम प्राणशक्ति का है। प्राणशक्ति से ही यह विश्वराद्ध है। यह प्राणशक्ति राधा और परमेश्वर श्रीकृष्ण दोनों परस्पर अनुस्यूत हैं। ब्रह्मवैवर्तपुराण में चार खण्ड है– ब्रह्मखण्ड, प्रकृतिखण्ड, गणपतिखण्ड और श्रीकृष्णजन्मखण्ड।

ब्रह्मखण्ड[9] में श्रीकृष्ण के महान् उज्ज्वल तेजः पुंज गोलोक का विस्तृत विवरण दिया गया है। परम पवित्रमय, दिव्यातिदिव्य चिन्मय ब्रह्मरूप तेजोमण्डल में परम प्रकाशमय पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण नित्य विद्यमान हैं। सृष्टि के आरम्भ में इन्हीं पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण के दक्षिण भाग में शङ्ख, चक्र, गदा तथा शाङ्र्गधनुष धारण किये हुए नारायण प्रभु प्रकट होकर उनकी स्तुति करते हैं। इसके साथ ही श्रीकृष्ण के वामपार्श्व से शंकर की तथा नाभिकमल से ब्रह्मा की उत्पत्ति दिखायी गयी है।

प्रकृतिखण्ड में परब्रह्म (श्रीकृष्ण) और श्रीराधा से प्रकट चिन्मय देवी–देवताओं की उत्पत्ति का वर्णन है। भगवान् श्रीकृष्ण स्वेच्छामय एवं निराकार होते हुए भी साकार हैं। ब्रह्मवैवर्तपुराण में श्रीकृष्ण दो रूपों में विभक्त हो गये हैं–एक द्विभुज और दूसरे चतुर्भुज।

गणपतिखण्ड में पुत्र प्राप्ति हेतु पार्वती द्वारा 'पुष्यक' व्रत का अनुष्ठान कर श्रीकृष्ण की अभ्यर्चना करना तथा तथा पुरोहित सनत्कुमार को दक्षिणा रूप में शिव प्रदान करना वर्णित है। अनन्तर गोलोकवासी श्रीकृष्ण से पार्वती की वर–प्राप्ति एवं गणेश रूप में श्रीकृष्ण के अवतरण का वर्णन है। ब्रह्मवैवर्तपुराण में यमलार्जुन–उद्धार के उपरान्त पन्द्रहवें अध्याय में राधा–माधव का विवाह वर्णित है। यह प्रसङ्ग किसी अन्य पुराण में नहीं है।

ब्रह्मपुराण

श्रीमद्भागवतपुराण, विष्णुपुराण तथा ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनन्तर जिन पुराणों में कृष्णकथा का साङ्गोपाङ्ग वर्णन हुआ है उनमें ब्रह्मपुराण, पद्मपुराण तथा महाभारत का खिलपर्व हरिवंशपुराण प्रमुख हैं। इनमें भागवत, ब्रह्मवैवर्त तथा विष्णुपुराण की कथा का ही अनुसरण किया गया है।

ब्रह्मपुराण में विष्णुपुराण की ही तरह पृथिवी की करुण पुकार सुनकर श्रीहरि के श्वेत श्याम केशों से राम और कृष्ण के अवतरण की बात कही गयी है।[10] पुराण के अध्याय 180 में कृष्णावतार के पहले व्यास द्वारा चतुर्व्यूहात्मक, निर्गुण, शाश्वत एवं पुराण विष्णु की स्तुति की गयी है–

नमस्कृत्वा सुरेशाय विष्णवे प्रभविष्णवे।
पुरुषाय पुराणाय शाश्वतायाव्ययाय च।।
चतुर्व्यूहात्मने तस्मै निर्गुणाय गुणाय च।
वरिष्ठाय गरिष्ठाय वरेण्यायामिताय च।।[11]

ब्रह्मपुराण की कृष्णकथा विष्णुपुराण से सर्वाधिक साम्य रखती है। इसके वर्ण्यविषय तथा कथा विष्णुपुराण के समान ही हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. श्रीमद्भगवद्गीता–4 / 7
2. श्रीमद्भगवद्गीता–4 / 8
3. श्रीमद्भागवतपुराण–10 / 2 / 26
4. विष्णुपुराण–5 / 31 / 4
5. विष्णुपुराण–5 / 31 / 16–20
6. पद्मपुराण, पातालखण्ड–71 / 9
7. पद्मपुराण, पातालखण्ड–81 / 53–58
8. ब्रह्मवैवर्तपुराण, प्रकृतिखण्ड–1 / 45–59
9. ब्रह्मवैवर्तपुराण, ब्रह्मखण्ड, अध्याय–3
10. ब्रह्मपुराण–181 / 26–27
11- ब्रह्मपुराण, अध्याय–180, श्लोक–1–2